



महाशय विक्षिप्त

खलील जिब्रान

अनुवादक : ज़ेहन-निशीन

अनुराग की एक प्रस्तुति विवश जनता के नाम  
Everyoung Global Intellectual Foundation



# महाशय विक्षिप्त

## खलील जिब्रान

अनुवादक : ज़ेहन-निशीन

अनुराग की एक प्रस्तुति विवश जनता के नाम  
Everyoung Global Intellectual Foundation



© सर्वाधिकार सुरक्षित । निजी अध्ययन, अनुसंधान, समालोचना अथवा समीक्षा के उद्देश्यों के लिए किसी भी उचित उपयोग के अतिरिक्त, किसी भी व्यावसायिक उद्देश्य के लिए इस प्रकाशन का कोई भी भाग कॉपीराइट के स्वामी की पूर्व अनुमति बिना प्रयोग नहीं किया जा सकता है ।

सर्वाधिकार एवर यंग ग्लोबल इन्टेलेक्चुवल फाउन्डेशन, काठमाण्डौ, नेपाल के नाम सुरक्षित हैं ।

प्रथम प्रकाशन : 2016 ई.

**ISBN: 978-99946-898-7-3**

**Everyyoung Global Intellectual Foundation**

**Ward 11, Gokarneshwor Municipality,**

**Kathmandu, NEPAL**

**Website: [www.eygif.org](http://www.eygif.org)**

**Contribution: NRs: 500/= or USD 5.00**

साहित्य के  
संसार की एक  
उत्कृष्ट कृति

## प्रस्तावना

मानव निवास एवं रहन-सहन तथा पर्यावरण के हर क्षेत्र में निर्दयी द्वन्द्वों का संसार, अत्यन्त दुर्भाग्यवश, हमारा जगत है। इस परिस्थिति का सबसे बड़ा उदाहरण सेना, पुलिस, अदालतों, कारागारों तथा इन सब की आधारभूत संरचना, जैसे अस्त्रशस्त्र आदि हैं, जो विश्व के उत्पादन का एक तिहाई से आधा समाप्त कर जाते हैं, और जो शेष पर, न केवल प्रभुत्व जमाए बैठे हैं, अपितु उसे सत्यानाश करने के गंभीर भय का स्रोत भी हैं।

हम युद्ध की एक प्रणाली के चंगुल में जकड़े हुए हैं, जिससे हमारी कोई सुरक्षा नहीं है।

जिस तरह से हम से हो सके, हमें इस युद्ध में लड़ना ही होगा, और वर्तमान संसार की इन विनाशकारी परिस्थितियों के विरुद्ध संग्राम करने के लिए हमने अपना सम्पूर्ण प्रयास करने का चयन किया है।

हमारा शस्त्र साहित्य है। और हमारे प्रथम आक्रमण का आरम्भ इन कृतियों से हो रहा है। इन का सेनापति खलील जिब्रान है।

खलील जिब्रान (1883 से 1931 ई) इस जगत के करोड़ों लोगों का प्रिय लेखक बना, और है, और यह अकारण नहीं है।

खलील जिब्रान की कृतियों के उत्तमतर बोध एवं उन से अधिक आनंद पाने के लिए मानव-दर्शन के विकास के इतिहास की थोड़ा सी समीक्षा करना आवश्यक है।

पुनर्जन्म होने की परिकल्पना प्राचीन है तथा इसे सम्भवतः प्रकृति के सामान्य अवलोकन से प्राप्त किया गया है : दिन के पश्चात् रात और रात के बाद दिन का आगमन; दिवाकर का लुप्त हो जाना तथा पुनः प्रकट होना; ऋतुओं

की आवर्ती प्रकृति, वृक्षों एवं वनस्पतियों पर पत्तियों को प्रकट होना तथा शरद ऋतु में उनका उतर जाना...

महात्मा बुद्ध ने अपने देहावसान के क्षण में शोकाकुल अपने शिष्य, आनंद को सांत्वना दी थी, “नहीं आनंद, रोते नहीं। क्या मैंने यह पहले ही तुमसे नहीं कहा है कि हमारे प्रियजनों से हमारा वियोग अपरिहार्य है? जो कुछ भी जन्मा है, जो कुछ भी उत्पन्न होता है, अनुकूलित किया जाता है, स्वयं उसके भीतर ही उसके विनाश की प्रकृति छुपी होती है। इसका कोई अन्य विकल्प हो ही नहीं सकता है।”

यूनानी दार्शनिक अनाक्सागोरस (500-428 ई. पू.) ने घोषणा की, “भौतिक संसार में, प्रत्येक वस्तु में समस्त वस्तुओं के अंश समावेश होते हैं।” उदाहरण के लिए, “कोई पशु जो आहार करता है, वह उसकी अस्थि, बाल, मांस आदि में परिवर्तन होता है, अतः अवश्य इसमें पहले ही वे सभी तत्व होने चाहियें।” यहाँ यह कहना भी उचित होगा कि एथेंस के न्यायालय ने अनाक्सागोरस के विरुद्ध मृत्युदण्ड का निर्णय सुनाया, क्योंकि उसने “दिनकर एक अग्निमय चट्टान है” कहा था, जो धर्म के सिद्धांत के विपरीत था। परन्तु अनाक्सागोरस ने एथेंस को सदा के लिए त्याग कर खुद को बचा लिया था।

यथार्थता अथवा अयथार्थता की अवधारणा विकास के कई चरणों से गुज़री और विभिन्न अवधियों के पश्चात् कई मानकों तक पहुँची। इस संदर्भ में यहाँ एक संबंधित किर्तीमान उल्लेखनीय है जो शंकराचार्य में दिखाई देता है, जिस (शंकराचार्य) ने हर किसी वस्तु को एक भ्रम (माया) माना, वह इस कारण कि कोई भी चीज़ स्थायी नहीं है। फिर सूफीमत (रहस्यवाद) और अग्रसर हुआ तथा उसने वहदत-उल वजूद (अस्तित्व की एकता) और वहदत-अश शहूद (साक्ष्य की एकता) के साथ साथ प्राचीन अर्बी अवधारणायें बरज़ख (वह स्थान जहाँ, उनके कथन

अनुसार, आत्मायें पृथ्वी पर अवतरण से पहले आवास करतीं हैं), एराफ़ (पृथ्वी से प्रस्थान पश्चात् आत्माओं का आवास-स्थान) के साथ साथ साबिता, एयान एवं जोया (सूफीमत के दृष्टिकोण में तीन आध्यात्मिक चरण) तथा अन्य कई सारी अवधारणाओं को आगे बढ़ाया ।

विचार की यह सरिता अब तक के अपने अंतिम गन्तव्य-स्थान पर हेगल के द्वंद्ववाद में पहुँची (अर्थात् गमनशील यथार्थ—यथार्थता तथा अयथार्थता की अवधारणाओं पर परिचर्चा के बजाय), जिसका प्रदर्शन साहित्य में खलील जिब्रान की कृतियाँ हैं ।

द्वंद्ववाद के चार आधारभूत सिद्धांतों का (जहाँ तक मैंने उन्हें समझा है) यहाँ उल्लेख करना आवश्यक होगा ।

1) न्यूनतम कण से ले कर सम्पूर्ण ब्रह्मांड तक, हर अवस्थित चीज़ की सीमाएं हैं । दिन, ऋतु, जीवन-काल, युग, पृथ्वी, सौर प्रणाली, आकाशगंगा, दृश्य एवं अदृश्य ब्रह्मांड... हर किसी वस्तु की भौतिक तथा सामयिक सीमाएं हैं ।

2) सीमित वस्तु असीमित से बनी है तथा असीमित सीमित से । उदाहरणार्थ, संख्या-रेखा के किसी भी क्षेत्र में असीमित बिन्दु होते हैं, और रेगिस्तान सहारा एवं संसार के सभी रेगिस्तानों की रेत के कण गिने जा सकते हैं । यहाँ यह व्यक्त करना अनिवार्य है कि असीमित केवल एक अनंत नहीं, अनंत अनंत हैं । उदाहरणार्थ, एक से दो तक जो अनंत बिन्दु हैं, और तीन से चार तक जो अनंत बिन्दु हैं, वे पृथक् पृथक् हैं ।

3) सभी चीज़ें (प्रसन्नता, पीड़ा, मित्रता, शत्रुता, जीवन, कार्य, योगदान, मानवीय संबंध...) सार्थक हैं, किन्तु केवल अपनी सीमाओं एवं परिमाओं में, इन परिमाओं के बाहर सब कुछ अपनी संगतता एवं अर्थ खो देता है । यह परिमायें भौतिक हो सकतीं हैं (यदि आप न्यूयॉर्क या

कराची में रहते हैं तो आप अपने घर में सिंह के आने तथा आप के साथ रात का भोजन करने की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं) अथवा सामयिक हो सकती हैं (आप ग्रीष्मकाल में शीतकालीन ठंड की अनुभूति करने की आशा नहीं कर सकते हैं)।

4) किसी भी चीज़ की एक दिशा में हो रही निरन्तर अग्रसता एक विशेष स्थान पर पहुँच कर अपने विपर्यय में परिवर्तित होती है। उदाहरणार्थ, दिन रात में और रात दिन में बदल जाते हैं। प्रतिस्पर्धा एकाधिकार की ओर तथा एकाधिकार प्रतिस्पर्धा की ओर अग्रसर होती है। “लोकतंत्र” “निरंकुशता” तथा “निरंकुशता” “लोकतंत्र” में तब्दील होती है। वसन्त ऋतु शरद ऋतु में बदल जाता है तो उसका विपरीत भी होता है...

द्वंद्ववाद के शेष सिद्धांत तथा तीन नियम इस प्रस्तावना के अभिप्राय से अलग हैं।

पुनर्जन्म होने की परिकल्पना, जन्मे हुए प्रत्येक चीज़ का संगठन एवं विखंडण, प्रत्येक वस्तु में समस्त वस्तुओं के अंश समावेश होने की बात, भ्रम (माया), सूफीमत (रहस्यवाद) की अवधारणाओं तथा द्वंद्ववाद के सिद्धांतों के विषय में इस प्राथमिक बोध के साथ, अब आप खलील जिब्रान की प्रतिभा के संग अपनी संगति का भरपूर आनंद उठा सकते हैं।

खलील जिब्रान की चित्रकारी को इन पाठ्य कृतियों में हम ने समावेश नहीं किया, वह केवल इस लिए कि भारत, पाकिस्तान तथा नेपाल में संस्कृति का स्तर अभी “लज्जास्पद” है, यद्यपि लोग अस्पतालों में जाते हैं, स्त्रीरोग विभाग में अपना परीक्षण करवाते हैं, शल्यचिकित्सा करवाते हैं, तथा अपने सम्पूर्ण परिधान उतार कर अपने निर्वस्त्र शरीर शल्यचिकित्सकों, उनके सहभागियों और अन्य लोगों के सुपुर्द करते हैं, और यद्यपि महावीर जैन,

ललेशवरी अतः अन्य लोगों की ँक वलसुत शृखला ने कोई वख्र धारण नहीं कलए, तथा लोगों ने उन्हें उच्चतम सम्मान से भी सम्मानलत कलया ।

पाठकों में से कलसी को भी वैसी “लज्जा” से बचाने के ललए, हमने इन पुस्तकों में कलत्रकारी शामिल न करने का नलर्णय कलया । जो पाठक उन कलत्रों का अवलोकन करना चाहते हैं वे

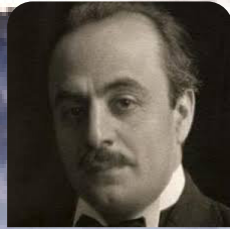
[http://www.inner-growth.info/khalil\\_gibran\\_prophet/html/galleries/gibran\\_gallery1.htm](http://www.inner-growth.info/khalil_gibran_prophet/html/galleries/gibran_gallery1.htm)

पर जा सकते हैं ।

अधिक कलसी वलंब बलना, आइये अपनी यात्रा आरम्भ करते हैं । हमें आशा है कल इन पुस्तकों से आप आनंदमग्न होंगे तथा यह आपके हलतों का अभलषेक करेंगी ।

ज़ेहन नलशीन

मार्च 4, 2016



खलील जिब्रान  
(1883 से 1931 ई)

## विषय सूची

|                                  |    |
|----------------------------------|----|
| प्रस्तावना                       | i  |
| महाशय विक्षिप्त                  | 1  |
| परमेश्वर                         | 3  |
| मेरे मित्र                       | 5  |
| काक-भगौडा                        | 8  |
| निद्राचार                        | 9  |
| बुद्धिमान कुत्ता                 | 10 |
| दो साधु                          | 11 |
| लेनदेन के संदर्भ में             | 13 |
| सात स्वयं                        | 14 |
| युद्ध                            | 17 |
| लोमड़                            | 19 |
| बुद्धिमान राजा                   | 20 |
| महत्वाकांक्षा                    | 22 |
| नया आनंद                         | 24 |
| अन्य भाषा                        | 25 |
| अनार                             | 27 |
| दो पिंजरे                        | 29 |
| तीन पिपीलिकाएँ                   | 30 |
| कब्र खोदनेवाला                   | 32 |
| मन्दिर की सीढियों पर             | 33 |
| धन्य नगर                         | 34 |
| भद्र परमेश्वर तथा दुष्ट परमेश्वर | 37 |
| पराजय                            | 38 |

## विषय सूची

|                         |    |
|-------------------------|----|
| रात तथा महाशय विक्षिप्त | 40 |
| मुखाकृतियाँ             | 43 |
| अधिक व्याप्त सागर       | 44 |
| क्रूस पर चढ़ा           | 47 |
| अंतरिक्षविज्ञ           | 49 |
| बहुत पुरानी अभिलाषा     | 50 |
| घास का एक वृण बोला      | 52 |
| आँख                     | 53 |
| दो विद्वान              | 54 |
| जब मेरा विषाद जन्मा     | 55 |
| और जब मेरा आह्लाद जन्मा | 57 |
| “निपुण संसार”           | 58 |

## महाशय विक्षिप्त

तुम मुझसे पूछते हो मैं पागल कैसे हुआ? यह बात ऐसे समापन तक पहुँची : बहुत सारे देवताओं के जन्म से अत्यधिक समय पूर्व मैं एक दिन गहन निद्रा से जागा तथा पाया कि वे सातों कृत्रिम चेहरे, अर्थात् मुखौटे, जिन्हें मैंने बनाकर सातों जीवनों में धारण किया था, वह मेरे सारे मुखौटे चोरी कर लिए गए थे। भीड़ वाली गलियों से मैं यह चिल्लाते हुए दौड़ा, “चोर, चोर। अभिशप्त चोर।”

देवियाँ एवं सज्जन मुझ पर हँसने लगे तथा कुछ व्यक्ति मेरे भय से भाग कर अपने अपने घरों के अंदर घुस गए।

तब जब मैं बाज़ार-स्थल पहुँचा तो एक मकान के छत से खड़ा एक युवा चिल्ला उठा, “वह एक विक्षिप्त है।” मैंने उसका दर्शन करने हेतु नयन ऊपर की ओर किए, स्वयं दिवाकर ने मेरी नग्न मुखाकृति पहली बार चूमी। प्रथम बार उज्ज्वल भास्कर ने मेरे अपने नंगे चेहरे का चुंबन लिया, तथा मेरी आत्मा में अंशुमाली के प्रेम की अग्नि फैल गई, फिर मुझे अपने मुखौटों की आवश्यकता नहीं रही। इसके पश्चात् परमानन्द की सी स्थिति में मैं चिल्लाया, “धन्य हों वे, सौभाग्य वर्षित हो उन चोरों पर जिन्होंने मेरे नकाब तथा मुखौटे चुराए।”

इस प्रकार मैं एक पागल आदमी बन गया।

तथा अपने पागलपन में मैंने स्वतंत्रता तथा सुरक्षा,

दोनों हासिल किए हैं, एकांत की स्वतंत्रता तथा समझे जाने से सुरक्षा, क्योंकि जो लोग हमें समझते हैं वह हमारे भीतर की किसी चीज़ को दास बना लेते हैं।

परंतु कहीं मुझे अपनी सुरक्षा पर बहुत गर्व न हो। कारागार में तो एक चोर भी अन्य चोरों से सुरक्षित होता है।

## परमेश्वर

प्राचीन समय में, जब मेरे अधरों पर संवाद की पहली चेष्टा पैदा हुई, मैं पवित्र पर्वत पर चढ़ा तथा परमेश्वर से प्रार्थना की, “स्वामी, मैं आपका दास हूँ। श्रीमान् की अदृश्य इच्छा मेरा नियम है तथा मैं सदैव आपका आज्ञापालन करूँगा।”

परंतु परमेश्वर ने कोई उत्तर नहीं दिया, तथा एक शक्तिशाली तूफान की तरह प्रस्थान हुआ।

इसके एक हज़ार वर्ष पश्चात् में पवित्र पर्वत पर चढ़ा तथा फिर परमेश्वर से प्रार्थना की, “सर्वशक्तिमान्, मैं आप द्वारा रचा हुआ हूँ। मिट्टी से श्रीमान् ने मुझे बनाया है तथा मैं सभी चीजों में आप का ही ऋणी हूँ।”

तथा परमेश्वर ने कोई जवाब नहीं दिया, अपितु हज़ार गुना तीव्र पंखों की तरह चला गया।

उस के एक हज़ार साल उपरांत मैं पवित्र पर्वत पर चढ़ा तथा परमेश्वर से पुनः निवेदन किया, “पिता श्री ! मैं आपका पुत्र हूँ। कृपा एवं वात्सल्य से आपने मुझे जन्म दिया, अतः प्रेम एवं अर्चना से मैं आपके साम्राज्य का वारिस हूँगा।”

और परमेश्वर ने कोई जवाब न दिया, तथा दूर पहाड़ों को ढकने वाले कोहरे की तरह, गुज़र गया।

अगली बार और एक हज़ार वर्ष पश्चात् मैं पवित्र पर्वत पर चढ़ा तथा फिर एक बार परमेश्वर से बोला, “हे परमेश्वर, हे मेरे उद्देश्य तथा मेरी परिपूर्ति; मैं आपका

अतीत तथा आप मेरे भविष्य हैं । मैं भूमि में आपकी जड़ हूँ तथा आप आकाश में मेरे सुमन हैं, तथा भास्कर के संमुख हम साथ साथ विकास पाते हैं ।”

परमेश्वर मेरे ऊपर झुका तथा मेरे कर्णों में फुसफुसाते हुए मीठी बातें कहीं एवं अपनी ओर दौडती आ रही नदिका को अंगीकार करने वाले महासागर की तरह मुझे गले लगाया ।

तथा जब मैं उतर कर घाटियों तथा मैदानों में गया, परमेश्वर वहाँ भी था ।

## मेरे मित्र

मेरे मित्र, मैं जो लगता हूँ, वह नहीं हूँ मैं । रूप तो बस एक परिधान है जिसे मैं शरीर पर धारण करता हूँ । यह एक निढाल कपडा है जो मुझे तुम्हारे प्रश्नों तथा तुम्हें मेरी गफलतों से बचाता है ।

मेरे मित्र ! मुझ में जो “मैं” कार्यरत है, वह मौनता के महल में रहता है, तथा वहीं वह हमेशा रहेगा : नज़रों से लुप्त, अगम्य ।

मैं तुम से अपने कथन पर विश्वास या अपने कार्यों पर भरोसा नहीं कराता । क्योंकि मेरे शब्द स्वर में तुम्हारे अपने विचारों के सिवा कुछ और नहीं, तथा मेरे कार्य तुम्हारी कार्यरत आशाओं के अतिरिक्त कुछ अन्य नहीं हैं ।

जब तुम कहते हो, “पवन पूर्व की ओर गतिशील है,” तो मैं कहता हूँ, “हाँ, यह पूरब की ओर ही चलती है ।” क्योंकि मैं तुम्हें इस बात से अवगत नहीं करा सकता कि मेरा मन वायु पर नहीं अपितु सागर के ऊपर विराजमान है ।

महासागर में घूम रहे मेरे विचारों को तुम नहीं समझ सकते, तथा न मैं तुम्हें उसका बोध कराऊँगा । मैं अकेले समुद्र में रहूँगा ।

जब तुम दिन में रह रहे होते हो, मेरे मित्र ! मैं रात में फिर रहा होता हूँ; फिर भी पहाड़ियों पर नृत्यमग्न दोपहर तथा घाटियों में चुपके चुपके पथ बना रहे बैंगनी

साये की बात करता हूँ; क्योंकि तुम मेरे अंधेरे के गीत सुन नहीं सकते हो, न ही तुम सितारों से टकराते हुए मेरे परोँ को देख सकते हो। तथा तुम्हारे न सुनने तथा न देखने में मैं सहमत हूँ। मैं रात के साथ अकेला रहूँगा।

जब तुम अपने स्वर्ग की ओर चढ़ रहे होते हो, मैं अपने नरक की ओर उतर रहा होता हूँ। फिर भी तुम मुझे असीम अंतरिक्ष के अगले सिरे से पुकारते हो, “मेरे हमदम, मेरे संगी,” तथा मैं तुम्हें वापस पुकारता हूँ, “मेरे संगी, मेरे हमदम”... क्योंकि मैं तुम्हें अपना नरक नहीं दिखाऊँगा। लौ तुम्हारी दृष्टि जला देगी तथा धुवाँ तुम्हारे नथुनों में भर जाएगा। तथा मैं अपने नरक से इतना प्रेम करता हूँ कि मैं तुम्हें वहाँ नहीं ले जाता। मैं नरक में अकेले ही रहूँगा।

तुम सच्चाई, सौंदर्य तथा सन्तभाव से प्यार करते हो, तथा तुम्हारी खातिर मैं कहता हूँ कि इन चीज़ों से प्रेम करना ठीक तथा उचित है। परंतु अपने हृदय के भीतर मैं तुम्हारे प्यार पर हँसता हूँ। फिर भी मैं तुम्हें अपनी हँसी नहीं दिखाता हूँ। मैं अकेला हँसता हूँ।

मेरे मित्र, तुम सज्जन, सतर्क एवं बुद्धिमान हो, नहीं इतना ही नहीं, तुम निपुण हो। तथा मैं भी तुम्हारे साथ समझदारी तथा सतर्कता से बात करता हूँ। परंतु फिर भी मैं पागल हूँ। तथापि मैं अपने पागलपन को कृत्रिम चेहरे से छुपाता है? मैं पागल तनहा ही रहूँगा।

मेरे मित्र, तुम मेरे मित्र नहीं हो, किंतु मैं यह बात तुम्हें कैसे समझाऊँ? मेरा मार्ग तुम्हारा मार्ग नहीं है,

फिर भी हम साथ साथ चलते हैं, हाथ से हाथ मिला कर ।

## काक-भगौडा

एक बार मैं एक काक-भगौडा यानी खेत में कौवे भगाने वाले पुतले से कहा, “तुम इस अलग से खेत में खड़े खड़े ज़रूर थक गए होगे।”

तथा उसने कहा, “डर पैदा करने की प्रसन्नता गहन तथा स्थायी होती है, तथा मैं इसे कभी नहीं उकताता हूँ।”

एक मिनट के लिए मैंने विचार किया तथा स्वीकार किया, “यह सत्य है, क्योंकि मैं भी इस आनंद से परिचित हूँ।”

उसने कहा, “इसके ज्ञाता केवल वही लोग हैं जो घास फूस से भरे हुए हैं।”

तब मैं उससे विदा हुआ, तथा मुझे यह नहीं पता था कि उसने मेरा सम्मान किया था अथवा अपमान।

एक वर्ष बीत गया, जिसके दौरान काक-भगौडा दार्शनिक बन गया।

फिर जब पुनः एक बार मेरा वहाँ से गुज़र हुआ, तो मैंने उसकी पहनी हुई अंग्रेजी टोपी के नीचे दो कौवों को अपने घोंसले बनाते हुए देखा।

## निद्राचार

में जिस नगरिका में जन्मा था वहाँ एक महिला तथा उसकी पुत्री रहतीं थीं, जो अपनी नींद में चलतीं थीं ।

एक रात, जब मौनत्व ने संसार को लपेट कर रखा था, वह महिला तथा उसकी पुत्री अपनी अपनी नींद में चलते हुए अपने कोहरे से ढके उद्यान में मिलीं ।

तथा माँ बोलीं और कहा, “अन्ततः, अन्ततः, मेरी शत्रु ! तुम, जिसके माध्यम से मेरा यौवन नष्ट हुआ—जिसने अपने जीवन का निर्माण मेरे जीवन के खंडहर पर किया है ! ए काश मैं तुम्हें मौत के घाट उतार सकती !”

तथा बेटी ने जवाब दिया : “ओ घृणास्पद महिला, स्वार्थी तथा बूढ़ी ! जो मेरे स्वतंत्रतम व्यक्तित्व तथा मेरे बीच खड़ी है ! जो मेरे जीवन को अपने स्वयं के मुरझाये जीवन की प्रतिध्वनि बनाना चाहती है ! काश तुम मर गई होती !”

तथा उसी क्षण एक मुर्गे ने बाँग दी, तथा दोनों महिलायें जाग गयीं । माँ ने कोमलता से पूछा, “क्या यह तुम हो, प्रिया?”

तथा बेटी ने शालीनता से उत्तर दिया, “हाँ, प्यारी ।”

## बुद्धिमान कुत्ता

एक दिन बिल्लों की एक सभा के पास से एक बुद्धिमान कुत्ते का गुज़र हुआ ।

तथा जब वह समीप आया और देखा कि वे बहुत व्यस्त थे तथा उन्होंने उसपर ध्यान नहीं दिया, तो वह रुका ।

तब सभा के बीच से एक बड़ा, गंभीर बिल्ला उठ खड़ा हुआ तथा उन्हें देखकर कहा, “भाइयो, तुम प्रार्थना करो, तथा जब तुम फिर से तथा बारंबार प्रार्थना करोगे, तो निस्संदेह, निश्चित ही चूहों की वर्षा होगी ।”

तथा जब कुत्ते ने यह बात सुनी तो वह अपने हृदय में हँसा तथा यह कहते हुए उनसे मुँह फेर लिया, “ऐ अंधे तथा मूर्ख बिल्लो, क्या यह लिखा नहीं गया है और क्या मैं तथा मुझ से पूर्व मेरे पूर्वजों का ज्ञात नहीं था कि वंदना, आस्था तथा याचना से जिस चीज़ की बारिश होती है वे चूहे नहीं अपितु अस्तियाँ हैं ।

## दो साधु

एक पृथक् पहाड़ी पर, दो एकांतवासी रहते थे जो परमेश्वर की पूजा करते तथा एक दूसरे से प्रेम करते थे।

उन दो साधुओं के पास एक मिट्टी का एक चषक था, तथा केवल यही उनकी संपत्ति थी।

एक दिन एक दुष्ट भूत बड़े साधु के हृदय में प्रवेश कर गया तथा वह छोटे के पास आकर कहने लगा, “लंबे समय से हम एक साथ रह रहे हैं। अब समय आ गया है कि हम अलग हो जायें। आओ हम अपनी संपत्ति का बंटवारा कर दें।”

तब छोटा साधु दुखी हुआ और उसने कहा, “इस बात से मुझे खेद होता है, भ्राता श्री, कि आप मुझे छोड़ेंगे। परंतु यदि आपको अपरिहार्य रूप में जाना ही है, तो ऐसा ही हो।” तथा उसने वह मिट्टी का चषक लाया तथा उसे दे दिया और कहा, “हम इसका वितरण नहीं कर सकते हैं, भ्राता श्री, इसे आप रख लीजिए।”

तब बड़े संयासी ने कहा, “दान में स्वीकार नहीं करूँगा। मैं केवल अपना ही भाग लूँगा। इसे हर हाल में विभाजित किया जाए।”

तथा छोटे ने कहा, “यदि चषक तोड़ दिया जाए, तो यह आपके या मेरे किस काम का रह जाएगा?” अगर यह आपकी इच्छा है तो उत्तम है कि हम चिट निकाल के इस का निर्धारण करें।”

परंतु बड़े संयासी ने फिर कहा, “मैं सिर्फ न्याय तथा

अपना स्वयं का हिस्सा रखूँगा, तथा मैं न्याय तथा अपने स्वयं के हिस्से के संबंध में बेकार चिट निकाल के निर्धारण करने पर भरोसा नहीं करूँगा। प्याला अवश्य विभाजित किया जाना चाहिए।”

इसके बाद छोटे साधु के पास और कोई तर्क नहीं रहा तथा उसने कहा, “अगर वास्तव में आप का यही अभिप्राय है, तथा आप यही चाहते हैं, तो आइए अब इस चषक को तोड़ दीजिए।”

परंतु बड़े साधु का चेहरा अत्यन्त अँधेरा हो गया, तथा वह चिल्ला पड़ा, “अरे ए अभिशप्त कायर, तुम लड़ो गे नहीं।”

## लेनदेन के संदर्भ में

एक बार एक स्थान पर एक आदमी रहता था जिसके पास एक घाटी भर की सुइयाँ थीं। तथा एक दिन ईसा की माता जी उनके पास आयीं और कहा : “मित्र, मेरे बेटे का वस्त्र फटा हुआ है तथा इससे पहले कि वह मन्दिर जाए मुझे उसे सिलने की जरूरत है। क्या तुम मुझे एक सुई नहीं दोगे?”

तथा उसने उसे सुई नहीं दी, परंतु उसके बेटे के मन्दिर में जाने से पहले अपने बेटे के पास ले जाने के लिए, लेनदेन के बारे में एक आध्यात्मिक प्रवचन दिया।

## सात स्वयं<sup>1</sup>

रात के सबसे मौन क्षण में, जब मैं अर्ध-निद्रा में था, मेरे सात स्वयं एक साथ बैठे थे तथा फुसफुसाहट में संवाद कर रहे थे :

पहला स्वयं : यहाँ, इस पागल व्यक्ति क भीतर, मैं इतने सारे वर्षों से रहता आया हूँ, दिन में इसकी व्यथा को नवीन करने तथा रात में इसके शोक को पुनः जन्माने के सिवा मेरा और कोई काम नहीं। मैं अपने भाग्य को अब और सह नहीं सकता हूँ, तथा अब मैं विद्रोह करता हूँ।

दूसरा स्वयं : तुम्हारा मुझसे बेहतर भाग्य है, अनुज, क्योंकि मेरे जिम्मे इस पागल व्यक्ति का आनंदमय अस्तित्व होना है। मैं इसकी हँसी हँसता तथा इसके प्रसन्न क्षणों का गायन करता हूँ, तथा तीन गुना तीव्र क्रदमों से इसके उज्वलतर विचारों का नृत्य करता हूँ। यह तो मैं हूँ जो अपने थके-माँदे अस्तित्व के खिलाफ विद्रोह करूँगा।

तीसरा स्वयं : और तुम लोगों को मेरी क्या पड़ी है? मैं, प्रेम दीवाना, जंगली भावना तथा प्रचण्ड इच्छाओं का जलता हुआ चिह्न? यह मैं, प्रेम-रोगी स्वयं हूँ जो इस पागल व्यक्ति के खिलाफ विद्रोह करूँगा।

चौथा स्वयं : तुम सब के बीच मैं सबसे अधिक

---

1 See also Shakespeare's "All the World is a Stage..."

व्यथित हूँ, क्योंकि मुझे घिनौनी घृणा तथा विनाशकारी कराहत के सिवा कुछ दिया ही नहीं गया। यह मैं हूँ, तूफान के मानंद अस्तित्व, जो नरक की अंधेरी गुफाओं में पैदा हुआ हूँ, जो इस पागल आदमी की सेवा करने के खिलाफ विद्रोह करूँगा।

पांचवां स्वयं : नहीं, यह मैं, विचार में डूबा अस्तित्व हूँ, वैचारिक अस्तित्व, भूख तथा प्यास का अस्तित्व, वह, अज्ञात तथा अभी निर्माण न हुई चीजों की तलाश में बिना आराम किए इधर उधर भटकना जिसका अपरिहार्य अभाग्य है; यह मैं हूँ, न कि तुम, जो विद्रोह करूँगा।

छठा स्वयं : तथा मैं, काम करने वाला अस्तित्व, दयनीय मज़दूर, जो धैर्यवान हाथों एवं तड़पती नेत्रों के साथ, दिनों को चित्रों में परिवर्तित करता तथा निराकार तत्वों को नया एवं अनन्त आकार प्रदान करता हूँ। यह मैं हूँ, अकेला रहने वाला, जो इस व्यग्र पागल के विरुद्ध विद्रोह करूँगा।

सातवां स्वयं : कितनी अद्भुत बात है कि तुम सब इस व्यक्ति के खिलाफ विद्रोह करना चाहते हो, क्योंकि तुम में से हर एक के ज़िम्मे एक पूर्व-निर्धारित भाग्य को पूरा करना है। आह ! काश मैं भी तुम में से किसी एक की तरह होता, एक अस्तित्व जिसकी किस्मत पूर्व-निर्धारित है !

परंतु मेरी कोई किस्मत नहीं है, मैं बेकार अस्तित्व हूँ, वह जो गूँगे, रिक्त, स्थानहीनता एवं समयहीनता में

बैठा हूँ, जबकि तुम सब जीवन के नवनिर्माण में व्यस्त हो। यह तुम सब हो कि मैं, पड़ोसियो, जिसे विद्रोह करना चाहिए?

जब सातवां स्वयं इस तरह बोला तो अन्य छह अस्तित्वों ने उसे दया की नज़रों से देखा परंतु कुछ ओर नहीं कहा, और जैसे जैसे रात गहरी होती गई, एक नवीन एवं सुखद आत्मसमर्पण को अंगीकार कर के, एक के पश्चात् दूसरा सोता गया।

परंतु सातवां स्वयं निगरानी करता रहा तथा अन-अस्तित्व पर नजरें गाड़ता रहा, जो अन-अस्तित्व सभी चीजों की पृष्ठभूमि में है।

## युद्ध

एक रात एक महल में एक भोज का आयोजन हुआ, तथा वहाँ एक आदमी आया जिसने स्वयं को युवराज के सामने अष्टांग प्रणाम में डाला, और आमन्त्रित सभी लोगों ने उसे देखा; तथा उन्होंने देखा कि उसकी एक आँख बाहर निकली हुई थी एवं यह कि खाली हुए आँख के स्थान से खून बह रहा था ।

और युवराज ने उससे पूछा, “तुम पर यह क्या बीती है?” तथा उस आदमी ने जवाब दिया, “हे युवराज, मैं व्यवसाय से एक चोर हूँ, तथा इस रात, क्योंकि चाँद नहीं था, मैं एक सराफ की दुकान लूटने गया, तथा जैसे ही मैं ऊपर चढ़ कर खिड़की से अंदर घुसा, मैं एक गलती कर बैठा तथा जुलाहे की दुकान में घुस गया और अंधेरे में मैं जुलाहे के करघह से टकराया तथा मेरी आँख निकल गई । और अब, हे राजकुमार, मैं जुलाहे के खिलाफ न्याय का चाहता हूँ ।”

तब राजकुमार ने जुलाहे को बलवा एवं वह आया, तथा यह निर्णय लिया गया कि उसकी एक आँख निकाल ली जाए ।

“हे राजकुमार,” जुलाहे ने कहा, “यह निर्णय न्याय अनुसार है । यह उचित है कि मेरी एक आँख ले ली जाए । परंतु, अफसोस ! मेरे लिए दोनों चक्षु आवश्यक हैं ताकि मैं जो कपड़े बुनता हूँ उन के दोनों ओर देख सकूँ । किंतु मेरा एक पड़ोसी, एक मोची, है, जिसके पास

भी दो नेत्र हैं, एवं उसके पेशे में दोनों आँखें आवश्यक नहीं हैं।”

तब राजकुमारी ने मोची को बुलवाया। और वह आ गया। तथा उन्होंने मोची की दो नेत्रों में से एक निकाल ली।

तथा न्याय संतुष्ट हुआ।

## लोमड़

एक लोमड़ ने सूर्योदय के समय अपना साया देखा और कहा, “आज मैं मध्याह्न के समय भोजन में एक ऊँट खाऊँगा।” अतः पूरी सुबह वह ऊँटों की तलाश में फिरता रहा। परंतु दोपहर के समय उसने अपना साया फिर देखा। और बोला, “एक चूहा चलेगा।”

## बुद्धिमान राजा

एक ज़माने में विरानी के दूरदराज शहर में एक राजा शासन करता था, वह शक्तिशाली एवं बुद्धिमान, दोनों था। लोग उसकी शक्ति से भय खाते तथा उसकी बुद्धिमत्ता के कारण उसे प्यार करते थे।

तो उस शहर के बीचों बीच एक कुआँ था, जिसका जल शीतल एवं निर्मल था, जिससे सारे निवासी, यहाँ तक कि राजा तथा दरबारी भी पानी पीते थे, क्योंकि वहाँ कोई दूसरा कुआँ नहीं था।

एक रात जब सब लोग सो रहे थे, एक चुड़ैल ने शहर में प्रवेश किया, तथा उसने कुवें में अद्भुत तरल पदार्थ की सात बूँदें डाल दीं और कहा, “इस समय से जो कोई भी यह पानी पिएगा वह पागल हो जाएगा।”

अगली सुबह सारे निवासियों ने, राजा तथा उसके रक्षक के बिना, उस कुवें से पानी पिया तथा वह पागल हो गए, जैसे कि चुड़ैल ने भविष्यवाणी की थी।

तथा उस दिन लोगों ने तंग गलियों तथा बाज़ारों में एक दूसरे से यह कानाफूसी करने के सिवा कुछ नहीं किया, “राजा पागल है। हमारे राजा तथा उसके रक्षक ने अपनी बुद्धि गँवा दी है। निश्चित रूप से हम एक पागल राजा की सरकार अन्तर्गत नहीं रहेंगे। हमें अवश्य उसका तख्ता पलटना चाहिए।”

उस शाम राजा ने आदेश दिया कि कुवें से एक सुनहरे पानपात्र को भरा जाए। और जब वह पानपात्र उसके

पास लाया गया तो उसने वह पानी खूब पिया, तथा उसे अपने रक्षक को भी पीने के लिए दे दिया ।

तथा विरानी के दूरदराज शहर में भारी खुशी का जश्न हुआ, क्योंकि उस शहर के सम्राट तथा उसके रक्षक ने अपनी बुद्धि वापस पा ली थी ।

## महत्वाकांक्षा

तीन व्यक्ति एक मधुशाला की मेज़ पर मिले। उनमें से एक जुलाहा था, दूसरा एक बढई तथा तीसरा एक फावड़ा चलाने वाला। जुलाहे ने कहा, “मैं ने आज सोने के दो सिक्कों के बदले उत्कृष्ट कतान का बुना हुआ एक कफन बेचा। पियो, जी भर के पियो !”

“तथा मैं ने” बढई ने कहा, “मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ ताबूत बेचा। शराब के साथ साथ हम भूननी हुई उत्तम चीज़ें भी लेंगे।”

“मैंने केवल एक कब्र खोदी,” फावड़ा चलाने वाले ने कहा, “परंतु मेरे ग्राहक ने मुझे दोगुनी मज़दूरी दी। चलो शहद के केक भी खाते हैं।”

तथा उस पूरी शाम मधुशाला व्यस्त रही, क्योंकि वह अक्सर शराब, मांस एवं केक माँगते रहे। और वे प्रसन्न थे।

और मेज़बान ने अपने हाथों को रगड़ा तथा अपनी पत्नी को देखकर मुस्कराया; क्योंकि उसके अतिथि खुले हाथों खर्च कर रहे थे।

जब वह मधुशाला से निकले तो चाँद कब का उदय हो चुका था, तथा वह सड़क के किनारे गाते एवं आपस में चीखते चिल्लाते हुए चल पड़े। मेज़बान तथा उसकी पत्नी मधुशाला के दरवाजे पर खड़े होकर उन्हें देख रहे थे।

“क्या खूब !” पत्नी ने कहा, “यह सज्जन थे ! इतने

उदार तथा हृदय के इतने धनी ! ए काश कि ये लोग  
हर दिन ऐसा ही भाग्य हमारे पास लाते ! तब हमारे  
बेटे को मधुशाला का रक्षक बनकर इतनी कड़ी मेहनत  
करने की जरूरत नहीं होती । हम उसे शिक्षा दे सकते,  
तथा वह एक पादरी बन सकता ।”

## नया आनंद

कल रात मैंने एक नए आनंद की खोज की, और जब मैं उसे पहली बार आजमा रहा था तो एक दूत तथा एक शैतान मेरे घर की ओर दौड़ते हुए आए। उनकी मुलाकात मेरे दरवाजे पर हुई तथा वह मेरी नई नई बनाई हुई खुशी के ऊपर झगड़ने लगे, एक चीख रहा था, “यह एक पाप है!” दूसरा कह रहा था, “यह एक पुण्य है!”

## अन्य भाषा

मेरा जन्म होने के तीन दिन पश्चात्, जब मैं अपने आसपास के नए संसार को आश्चर्य भरे भय के साथ घूरते हुए, रेशमी पलने में लेटा हुआ था, मेरी माता मेरी आया से संबोधन करने लगी तथा पूछा, “मेरा पुत्र कैसा है?”

तथा आया ने जवाब दिया, “मैडम, वह अच्छा है, मैंने उसे तीन बार दूध पिलाया है, तथा मैंने इस से पहले कोई ऐसा बच्चा नहीं देखा जो इतनी कम उम्र में इतना खुश हो।”

और मैं रुष्ट था, तथा मैं चीखा, “यह यथार्थ नहीं है, माँ, क्योंकि मेरा बिस्तर कठोर है, और दूध जो मैंने चूसा है वह मेरे मुँह को कड़वा लगता है, एवं वक्षस्थल की गंध मेरे नथुनों में खराब लगती है, और मैं बहुत दुखी हूँ।”

परंतु मेरी माँ नहीं समझीं, न ही मेरी आया समझीं; क्योंकि जो भाषा में बोलता था वह उस संसार की थी जहाँ से मैं आया था।

और मेरे जीवन के इक्कीसवें दिन, जब मेरा नाम रखा गया, पादरी ने मेरी माँ से कहा, “तुम्हें निस्सन्देह खुश होना चाहिए, मैडम, कि तुम्हारा बेटा एक ईसाई पैदा हुआ।”

तथा मैं आश्चर्य चकित था। और मैंने पादरी से कहा, “तब तो स्वर्ग में आप की माता श्री दुखी होंगीं, क्योंकि

आप एक ईसाई पैदा नहीं हुए थे ।”

परंतु पुजारी भी मेरी भाषा नहीं समझा ।

तथा सात मास पश्चात्, एक ज्योतिषी ने मेरी ओर देखा, और उसने मेरी माँ से कहा, “तुम्हारा बेटा एक राजनीतिज्ञ एवं लोगों का एक महान नेता होगा ।”

परंतु मैंने चीख कर कहा, “यह एक झूठी भविष्यवाणी है, क्योंकि मैं एक संगीतकार हूँगा, और सिवाय एक संगीतकार में और कुछ भी नहीं हूँगा ।”

परंतु उस उम्र में भी मेरी भाषा नहीं समझी गई ।  
तथा मेरा आश्चर्य लाजवाब था ।

अब तैंतीस वर्ष पश्चात्, जिनके दौरान मेरी माँ, तथा आया एवं पुजारी सब मृत्यु को प्राप्त हो गए, (उनकी आत्माओं पर परमेश्वर का साया हो) ज्योतिषी अभी भी जीवित है । तथा कल मन्दिर के द्वार के पास मेरी उससे मुलाकात हुई; और जब हम बातें कर रहे थे, उसने कहा, “मैंने हमेशा से यह जाना था कि तू एक महान संगीतकार हो जाएगा । तेरे नवजातकाल में भी मैंने भविष्यवाणी की थी और तेरे भाग्य की अवस्था पहले ही बता दी थी ।”

तथा मैंने उस पर विश्वास किया, क्योंकि अब मैं भी उस दूसरी दुनिया की भाषा भूल चुका हूँ ।

## अनार

एक समय ऐसा था कि जब मैं एक अनार के हृदय में बसेरा करता था, तो मैं ने एक बीज को यह कहते सुना, “किसी दिन में वृक्ष बन जाऊँगा तथा वायु मेरी शाखों में गायनमग्न होगी, तथा सूरज की किरणों मेरे पतों पर नृत्यमग्न होंगी, और मैं सभी मौसमों में मजबूत तथा सुंदर रहूँगा।”

तब दूसरा बीज बोला और कहा, “जब मैं तुम्हारे जैसा युवा था, मेरे विचार भी ऐसे ही थे; परंतु अब जबकि मैं चीजों को तौल एवं नाप सकता हूँ, तो मुझे समझ आया कि मेरी अपेक्षाएँ व्यर्थ थीं।”

तब तीसरा बीज भी बोल पड़ा, “मैं हमारे अंदर कुछ भी ऐसा नहीं देख रहा हूँ जो ऐसे किसी महान भविष्य का आश्वासन देता हो।”

तथा चौथे ने कहा, “परंतु बिना एक महान भविष्य के, हमारा जीवन कैसा उपहास होगा !”

कहा पाँचवे ने, “आखिर इस बात पर झगडा क्यों कि हम क्या होंगे, जबकि हमें यह भी पता नहीं है कि हम हैं क्या।”

परंतु छठे ने जवाब दिया, “हम जो कुछ भी हैं, वह तो हम रहेंगे ही।”

तथा सातवें ने कहा, “मेरे पास स्पष्ट धारणा है कि हर चीज़ किस तरह से होगी, परंतु मैं इसे शब्दों का वस्त्र नहीं पहना सकता हूँ।”

तब आठवाँ बोला, और फिर नवाँ, फिर दसवाँ, और फिर कई सारे, यहाँ तक कि हर कोई बोलने लग गया, और मैं स्वरोँ की बहुतायत के कारण कुछ भी भेद न कर सका ।

और इसलिए उसी दिन में एक श्रीफल के हृदय में चला गया, जहाँ बीज कुछ ही हैं एवं वे लगभग मौन रहते हैं ।

## दो पिंजरे

मेरे पिता के उद्यान में दो पिंजरे हैं। उनमें से एक में एक सिंह है, जिसे मेरे पिता के दासों ने नीनावाह मरुभूमि से लाया है; दूसरे में एक गानहीन गौरैया है।

हर दिन प्रभातकाल में गौरैया सिंह से पुकार कर कहती है, “शुभ प्रभात, भाई जान, कैदी।”

## तीन पिपीलिकाएँ

तीन पिपीलिकाएँ धूप में सो रहे एक व्यक्ति की नाक पर मिलीं। और एक दूसरे को, अपनी अपनी जनजाति के रिवाज के अनुसार, सलाम करने के बाद वहाँ खड़ी होकर बातचीत करने लगीं।

पहली पिपीलिका ने कहा, “यह पहाड़ियाँ तथा मैदान मेरे ज्ञान में सबसे बंजर हैं। मैं ने सारा दिन खोजा कि किसी प्रकार का दाना मिल जाए, परंतु कुछ भी नहीं मिला।”

कहा दूसरी पिपीलिका ने, “मैंने भी कुछ नहीं पाया है, यद्यपि मैं हर कोने तथा खुले स्थान में गयी हूँ। मेरा मानना है, यह वही चीज़ है जिसे मेरे लोग कोमल, गतिशील भूमि कहते हैं, जहाँ कुछ नहीं उगता है।”

तब तीसरी पिपीलिका ने अपनी गर्दन उठाई और कहा, “मेरी सहेलियो, हम इस समय सर्नोच्च पिपीलिका, सर्वशक्तिमान एवं असीम पिपीलिका की नाक पर खड़े हुए हैं, जिसका शरीर इतना विशाल है कि हम उसे देख नहीं सकते, जिस का साया इतना व्यापक है कि हम उसका पता नहीं लगा सकते, जिसकी आवाज़ उतनी ऊँची है कि हम उसे सुन नहीं सकते, तथा वह सर्वव्यापी है।”

जब तीसरी पिपीलिका ऐसा बोली तो अन्य पिपीलिकाओं ने एक दूसरे को देखा तथा हँस पड़ीं।

और उसी क्षण आदमी ने हरकत की तथा अपनी नींद

में अपना हाथ उठा कर अपनी नाक रगड़ी, और तीनों  
पिपीलिकाएँ कुचल गयीं ।

## कब्र खोदनेवाला

एक बार जब मैं अपने एक मृत स्वयं को दफन कर रहा था, कब्र खोदनेवाला मेरे पास आया तथा मुझसे कहा, “उन सभी लोगों में जो यहाँ दफन करने आते हैं, मैं केवल तुम्हें पसंद करता हूँ।”

कहा मैं ने, “तुम मुझे अत्यंत प्रसन्न करते हो, परंतु मुझे तुम क्यों पसंद करते हो?”

“क्योंकि,” उसने कहा, “लोग यहाँ रोते हुए आते हैं तथा रोते हुए चले जाते हैं। केवल तुम हँसते हुए आते हो तथा हँसते हुए लोट जाते हो।”

## मन्दिर की सीढियों पर

गत संध्या, मन्दिर की संगमरमरी सीढियों पर, मैंने  
एक महिला को देखा, जो दो पुरुषों के बीच बैठी हुई थी  
। इसका एक गाल पीला, दूसरा लाल था ।

## धन्य नगर

मेरे यौवन में मुझे बतलाया गया कि एक विशिष्ट शहर में प्रत्येक ईश्वरीय पुस्तकों के अनुसार जीवनयापन करता है।

तथा मैंने कहा, “मैं उस नगर एवं उसकी धन्यता का पता करूँगा।” परंतु वह शहर अत्यधिक दूर था। तब मैंने अपनी यात्रा के लिए अच्छी खासी तैयारी की। फिर चालीस दिनों के पश्चात् मुझे उस नगर का दर्शन हुआ, तथा इकतालीसवें दिन मैंने उस में प्रवेश किया।

और ए आश्चर्य ! सभी निवासियों की केवल एक एक आँख थी तथा केवल एक एक हाथ। और मैं तो हैरान हो गया एवं स्वयं से कहने लगा, “क्या इतने धन्य नगर के लोगों की मात्र एक एक आँख तथा एक एक ही हाथ होना चाहिए?”

तब मैंने देखा कि वे भी हक्के बक्के हो गए थे, क्योंकि वे मेरे दो हाथों तथा मेरी दो आँखों पर अनियंत्रित विस्मयातिरेक थे। और जब वे आपस में बातें कर रहे थे तो मैंने उनसे पूछा, “क्या यह वास्तव में वही धन्य शहर है, जहाँ हर एक व्यक्ति ईश्वरीय पुस्तकों के अचूक अनुसार अपना जीवन गुज़ारते हैं?” और उन्होंने कहा, “हाँ, यह वही नगर है।”

मैं ने संवाद जारी रखते हुए कहा, “परंतु आप सब पर यह क्या बीती है, आप की दाहिनी आँख तथा आपके दाहिने हाथ कहाँ हैं?”

और सभी लोग भावनाओं से डूब गए । अतःपरं उन्होंने कहा, “तुम आओ और देखो ।”

तब वह मुझे शहर के बीचों बीच स्थित देवालय तक ले गए । और मन्दिर के अंदर मैं ने हाथों तथा आँखों का अंबार देखा । सब मुरझाए हुए । तब मैं ने कहा, “अफसोस ! यह किस विजेता सेना ने तुम पर ऐसा अत्याचार किया है?”

तथा वे आपस में बड़बड़ाए । तथा उनमें से एक वृद्ध व्यक्ति उठकर सामने आए और कहे, “यह काम हमारा स्वयं का है । परमेश्वर ने हमें हमारे भीतर विराजमान दुष्टता पर विजेता बनाया है ।”

तथा वह मुझे एक ऊँची वेदी पर ले गया, और सभी लोग पीछे आए । अतःपरं उसने मुझे वेदी के ऊपर तराशा एक पाठ दिखाया और मैंने पढा :

“अगर तुम्हारी दाहिनी आँख तुम्हें अप्रसन्न करे, उसे स्वयं बाहर निकाल दो तथा फेंक दो, क्योंकि यह तुम्हारे लिए लाभप्रद है कि तुम्हारा एक अंग नष्ट हो, न कि यह कि तुम्हारा पूरा शरीर नरक में फेंक दिया जाए । और यदि तुम्हारा दाहिना हाथ तुम्हारा उल्लंघन करे, उसे काट डालो एवं उसे अपने से दूर करो; क्योंकि यह तुम्हारे लिए लाभदायक है कि तुम्हारा एक अंग नष्ट हो, न कि यह कि तुम्हारा पूरा शरीर नरक में फेंक दिया जाए ।”

तब मैं समझ गया । और मैं ने घूमकर सभी लोगों की ओर देखा तथा ऊँचे स्वर से पूछा, “क्या आप लोगों

के बीच कोई ऐसा पुरुष या महिला नहीं कि जिसके दो हाथ तथा दो आँखें हैं?”

तथा उन्होंने मुझे यह कह कर उत्तर दिया, “नहीं, कोई नहीं। कोई भी पूर्ण नहीं है, सिवाय उनके, जो इतने कम उम्र है कि वे पवित्रग्रंथ पढ़ने तथा उसकी आज्ञायें समझने में असमर्थ हैं।”

तथा जब हम मन्दिर से बाहर आ गए, तो मैं ने वह धन्य शहर तुरंत छोड़ दिया; क्योंकि मैं उतना कम उम्र का नहीं था, और मैं पवित्रग्रंथ पढ़ सकता था।

## भद्र परमेश्वर तथा दुष्ट परमेश्वर

भद्र परमेश्वर तथा दुष्ट परमेश्वर की भेंट एक पर्वत की शिखर पर हुई ।

भद्र परमेश्वर ने कहा, “अभिनंदन, भात्रा श्री ।”

दुष्ट परमेश्वर ने कोई उत्तर नहीं दिया ।

और भद्र परमेश्वर ने कहा, “आज आपका मिज़ाज खराब है ।”

“हाँ,” दुष्ट परमेश्वर ने कहा, “क्योंकि कई दिनों से मुझे गलती से लोगों ने तुम समझ लिया है, मुझे तुम्हारे नाम से पुकारा है, और ऐसा व्यवहार किया है जैसे मैं तुम हूँ, और यह बात मुझे अप्रसन्न करती है ।”

तब भद्र परमेश्वर ने कहा, “परंतु मुझे भी तो गलती से तुम समझा गया है एवं तुम्हारे नाम से पुकारा गया है ।”

दुष्ट परमेश्वर लोगों की मूर्खता को कोसते हुए चलता बना ।

## पराजय

पराजय, मेरी शिकस्त, मेरी एकांत एवं मेरी पृथक्ता;  
मुझे सहस्र विजयों से प्रियतम हो तुम,  
तथा मेरे हृदय के लिए सभी विश्व-वैभव से मधुर हो  
तुम ।

पराजय, मेरी शिकस्त, मेरा आत्म-बोध तथा मेरी  
अवज्ञा,  
तुम्हारे माध्यम से मैं जानता हूँ कि अभी जवान हूँ मैं  
एवं पैरों से फुर्तीला  
तथा मुरझाने वाले सहरों में न फँसने वाला ।  
और तुम में मुझे अरण्यवास मिल गया है  
एवं छोड़े जाने तथा तिरस्कार किए जाने का आनंद ।

पराजय, मेरी शिकस्त, मेरी चमकती हुई तलवार  
तथा ढाल,  
तुम्हारी आँखों में मैंने पढा है  
कि राजगद्दी प्राप्ति का अर्थ दास होना है,  
तथा, समझे जाने का तात्पर्य नीचे उतार के समतल  
किया जाना है,  
और पकड़े जाने का अभिप्राय केवल अपनी पूर्ति को  
पहुँचना है  
और एक परिपक्व फल की तरह गिरना तथा आहार  
किया जाना है ।

पराजय, मेरी शिकस्त, मेरी साहसी साथी,  
तुम मेरे गीत, मेरी चीखें तथा मेरी खामोशियाँ  
सुनोगी,  
तथा तुम्हारे सिवा कोई और तुम्हारे पंखों की  
फरफराहट,  
एवं सागरों की माँग,  
तथा रात में जलने वाले पहाड़ों की  
मुझे नहीं बताएगा ।  
तथा मेरी ढलान एवं चट्टानी आत्मा केवल तुम चढ़ो  
गी ।

पराजय, मेरी शिकस्त, मेरी अविनाशी हिम्मत,  
तुम और मैं तूफान के साथ हँसेंगे,  
तथा हम परस्पर अपने भीतर मर रहे सभी तत्वों के  
लिए कब्रें खोदेंगे,  
और हम दृढ संकल्प के साथ धूप में खड़े होंगे,  
और हम भयंकर होंगे ।

## रात तथा महाशय विक्षिप्त

“ए निशा ! मैं तुम्हारे जैसा हूँ, अँधेरा एवं नग्न; में अग्नि से भरे पथ पर चलता हूँ, जो मेरे दिवास्वप्नों से श्रेष्ठ है; और जहाँ जहाँ मेरे पग ज़मीन को छूते हैं, वहाँ वहाँ एक दिग्गज शाहबलूत वृक्ष का उदय होता है।”

“नहीं, तुम मेरी तरह नहीं हो, हे महाशय विक्षिप्त, क्योंकि तुम अभी भी पीछे की ओर मुड़ कर देखते हो कि रेत पर तुम ने अपने कदमों का कितना बड़ा चिन्ह छोड़ा है।”

“ए रजनी ! मैं तुम्हारे जैसा हूँ, शांत एवं गहन; तथा मेरी तन्हाई के हृदय में एक देवी अपने नवजन्मे शिशु की शय्या में रहती है, और उस नवजात के भीतर स्वर्ग नरक को छूता है।”

“नहीं, तुम मेरे समान नहीं हो, हे महाशय विक्षिप्त, क्योंकि तुम अभी भी व्यथा के सामने थरथराते हो, और पाताल का गीत तुम्हें भयभीत करता है।”

“ए तमिस्रा ! मैं तुम्हारे जैसा हूँ, प्रचण्ड एवं भयानक; क्योंकि मेरे कान कुचले हुए राष्ट्रों की चीखों तथा भूली हुई सरज़मीनों की आहों से भरे हैं।”

“नहीं, तुम मेरे प्रतिरूपी नहीं हो, हे महाशय विक्षिप्त, क्योंकि तुम अभी भी अपने अल्प अस्तित्व को अपना साथी मानते हो, और बृहत् स्वयं के साथ तुम मित्र बन नहीं सकते।”

“ए अलका ! मैं तुम्हारे जैसा हूँ, अत्याचारी एवं

नृशंस; क्योंकि मेरा वक्षस्थल सागर में जल रहे जहाज़ों से ज्योतिरमय है, तथा मेरे होंठ मृत सैनिकों के खून से भीगे हैं।”

“नहीं, तुम मेरे सादृश्य नहीं हो, हे महाशय विक्षिप्त, क्योंकि एक जुड़वां आत्मा की कामना अब भी तुम्हारे हृदय में है, और तुम अपने लिए आप कानून नहीं बने हो।”

“ए विभारी ! मैं तुम्हारे जैसा हूँ, सानन्द एवं प्रसन्न, क्योंकि मेरे प्रतिबिम्ब में आवासित व्यक्ति अब विशुद्ध मदिरा की मद में मत्त है, तथा मेरी अनुगामी सुन्दरी प्रसन्नतापूर्वक पाप कर रही है।”

“नहीं, तुम मेरे सरूप नहीं हो, हे महाशय विक्षिप्त, क्योंकि तुम्हारी आत्मा सात परतों के पर्दे में लिपटी हुई है तथा तुम्हारे हाथ में तुम्हारा हृदय नहीं है।”

“ए रात ! मैं तुम्हारे जैसा हूँ, धैर्यवान एवं भावुक, क्योंकि मेरी छाती में मुरझाए हुए चुंबनों के कफनों में एक हज़ार मृत प्रेमी दफन हैं।”

“यह हुई ना बात, ए महाशय विक्षिप्त, क्या तुम मेरे जैसे हो? क्या तुम मेरे समान हो? और क्या तुम एक घोड़े की तरह तूफान पर सवार हो सकते हो, तथा एक तलवार की तरह बिजली समा सकते हो?”

“तुम्हारी तरह, हे तमिस्रा ! तुम्हारी तरह शक्तिशाली तथा उच्च हूँ मैं, और मेरा सिंहासन ध्वस्त हुए देवताओं के अंबारों से निर्माण हुआ है, तथा मेरे सामने भी दिन मेरे वस्त्र के किनारे को छूने के लिए गुज़रते हैं परंतु मेरे

चेहरे पर नज़र जमाने के लिए कभी नहीं गुज़रे ।”

“क्या तुम मेरी तरह हो, मेरे अंधकारतम हृदय के बच्चे? और क्या तुम मेरे अनियंत्रित विचारों का मनन करते हो एवं मेरी विस्तृत भाषा बोलते हो?”

“निस्संदेह हम जुड़वाँ हैं, हे रात; क्योंकि तुम अंतरिक्ष प्रकट करती हो और मैं अपनी आत्मा का प्रकटन करता हूँ ।”

## मुखाकृतियाँ

मैं ने एक हज़ार चेहरों की मुखाकृति देखी है, तथा एक चेहरा ऐसा देखा है जो केवल एक ही मुखाकृति थी जैसे कि उसे एक ही साँचे में ढाला गया हो।

मैं ने एक चेहरा ऐसा देखा है जिसकी चमक के पार मुझे कुरूपता नज़र आ सकती थी, और एक ऐसा चेहरा देखा है कि जिसके सौंदर्य का दर्शन करने के लिए मुझे उसकी चमक को उठाना पड़ता।

मैं ने एक वृद्ध चेहरा देखा है जिस पर खालीपन से भरी कई रेखाएँ थीं, और एक सपाट चेहरा देखा है जिसमें सभी चीज़ें उत्कीर्ण थीं।

मैं चेहरों को जानता हूँ, क्योंकि मैं उन कपड़ों के आर-पार देख लेता हूँ जो मेरी अपनी आँख बुनती है, और उनके तानबान के पीछे यथार्थ का मैं दर्शन करता हूँ।

## अधिक व्याप्त सागर

मेरी आत्मा और मैं महान समुद्र में स्नान करने के लिए गए। और जब हम तट पर पहुँचे, तो हम एक अदृश्य तथा एकांत जगह की तलाश में इधर उधर फिरने लगे।

परंतु जब हम चल रहे थे, हम ने एक धूसर चट्टान पर बैठे एक व्यक्ति को देखा जो एक झोले से रत्ती भर नमक निकालकर समुद्र में फेंक रहा था।

“यह तो निराशावादी है,” मेरी आत्मा ने कहा, “हमें यह जगह छोड़ देनी चाहिए। हम यहाँ स्नान नहीं कर सकते हैं।”

हम चलते रहे जब तक कि हम एक तंग खाड़ी में पहुँच गए। वहाँ हम ने एक सफेद चट्टान पर खड़े एक ऐसे व्यक्ति को देखा जिसके हाथ में जवाहरात से अलंकृत एक संदूक था, जिससे वह शकर निकालकर समुद्र में डाल रहा था।

“और यह आशावादी है,” मेरी आत्मा ने कहा, “तथा यह भी हमारे नग्न शरीर को कदापि न देखे।”

हम आगे बढ़ गए। तथा तट पर हमने एक व्यक्ति देखा जो मृत मछलियों को उठा उठा कर उन्हें कोमलता से पुनः पानी में डाल रहा था।

“और हम इसके सामने स्नान नहीं कर सकते हैं,” मेरी आत्मा बोली। “यह दयालु उदारकर्ता है।”

और हम प्रस्थान हुए।

तब हम उस स्थान पर पहुँचे जहाँ हम ने एक व्यक्ति

को देखा जो रेत पर अपने साये का चित्र बना रहा था । तीव्र लहरें आतीं और उसे मिटा देतीं । परंतु वह उसे बारम्बार बनाता रहा ।

“यह रहस्यवाद का अनुयायी है,” मेरी आत्मा बोली । “हमें इसे छोड़ देना चाहिए ।”

हम आगे चल पड़े, जब तक कि एक शांत खोह में हम ने एक आदमी को देखा, जो झाग को लेता और उसे एक सफेद मरमर के प्याले में रख देता ।

“यह आदर्शवादी है,” मेरी आत्मा बोली, “निश्चित रूप से, वह हमारी नग्नता न देखे ।”

और हम चल दिए । सहसा हमने एक तीव्र ध्वनि सुनी । “यह समुद्र है । यह गहरा सागर है । यह व्यापक तथा बलवान सागर है ।” और जब हम उस आवाज़ के पास पहुँचे तो यह एक आदमी था जिसकी पीठ समुद्र की ओर मुड़ी थी तथा जो अपने कान पर एक सीप लगाकर उसकी सरसराहट सुन रहा था ।

और मेरी आत्मा ने कहा, “हमें यहाँ से गुज़र जाना चाहिए । वह यथार्थवादी है, जो अपनी पीठ उस सम्पूर्ण की ओर करता है जिसे वह समझ नहीं सकता है, तथा जो स्वयं को एक घटक के साथ संलग्न रहता है ।”

इसलिए हम आगे बढ़ गए । और चट्टानों के बीच घास फूस से भरी एक जगह में एक व्यक्ति था जो अपना सिर रेत में दफन किए हुए था । तथा मैं ने अपनी आत्मा से कहा, “हम यहाँ स्नान कर सकते हैं, क्योंकि वह हमें देख नहीं सकता है ।”

“कदापि नहीं,” मेरी आत्मा ने उत्तर दिया, “क्योंकि यह इन सब में सबसे घातक है। यह अतिधर्मनिष्ठ है।”

तब एक बड़ा भारी विषाद मेरी आत्मा के चेहरे पर तथा उसकी आवाज़ पर विराजमान हुआ।

“हमें यहाँ से चले जाना चाहिए,” मेरी आत्मा ने कहा, “क्योंकि यहाँ कोई एकांत, कोई भी गुप्त स्थान नहीं है, जहाँ हम स्नान कर सकें। मैं नहीं चाहती कि मेरे स्वर्णिम केश वायु का कोई झोंका उठा ले, तथा इस पवन में मेरी दूधिया छाती नग्न करना मुझे स्वीकार नहीं, और प्रकाश मेरी पवित्र नग्नता प्रदर्शित करे, यह मुझे गवारा नहीं।”

तब हम उस समुद्र को छोड़कर अधिक व्याप्त सागर की तलाश में चल पड़े।

## क्रूस पर चढ़ा

मैंने लोगों से चीख कर कहा, “मैं क्रूस पर चढ़ाया जाऊँगा !”

तथा उन्होंने कहा, “तुम्हारा खून हमारे सिर पर क्यों हो?”

और मैंने जवाब दिया, “पागल लोगों को सूली पर लटकाने के सिवा तुम्हारी महिमा कैसे बढ़ेगी?”

तथा उन्होंने मेरी बात मान ली और मुझे सूली पर लटका दिया । और सूली ने मुझे संतुष्टी प्रदान की ।

और जब मुझे पृथ्वी एवं आकाश के बीच फाँसी पर लटकाया गया, तो उन्होंने मुझे देखने की खातिर अपने सिरों को उठाया । और वह गौरवान्वित हुए, क्योंकि उनके शीश इससे पहले कभी भी उठाए नहीं गए थे ।

किंतु जब वे खड़े होकर मुझे देखने लगे तो उनमें से एक ने पूछा, “तुम किस बात का प्रायश्चित्त कर रहे हो?”

और दूसरा बोला, “तुम किस उद्देश्य हेतु अपनी बलि दे रहे हो?”

एवं तीसरे ने कहा, “क्या तुम सोचते हो कि इस मूल्य से तुम्हें विश्ववैभव मिल जाएगा?”

तब चौथे ने कहा, “देखो, वह कैसे मुस्कुरा रहा है ! क्या ऐसे दर्द की उपेक्षा की जा सकती है?”

और मैं उन सभी को उत्तर दिया, एवं कहा :

“केवल इस बात का स्मरण करो कि मैं मुस्कुराया । मैं कोई प्रायश्चित्त नहीं कर रहा हूँ, न कोई बलिदान दे

रहा हूँ, और न ही मुझे किसी कीर्ति की कामना है; और मेरे पास क्षमा किए जाने का कुछ भी नहीं है। मैं तृषित था और मैं ने अपना खून स्वयं पीने के लिए तुम्हें तलाश किया। क्योंकि एक दीवाने की प्यास बुझाने के लिए स्वयं अपने खून के सिवा दुनिया में और क्या रखा है? मैं गूँगा था : और मैं ने अपना मुख प्राप्त करने के लिए तुम से घाव माँगे। मैं तुम्हारे दिनों एवं रातों में कैद था और मैं ने विशालतम दिनों एवं रातों के द्वार की खोज की।

“तथा अब मैं तुमसे विदा होता हूँ। जैसे अतीत में अन्य क्रूस को प्राप्त हुए व्यक्ति विदा हुए। और यह गुमान न करना कि हम क्रूस पर चढ़ने से ऊब गए हैं। क्योंकि विशालतम भूमियों एवं आकाशों के बीच, अधिक बड़े तथा अत्यधिक बड़े लोगों द्वारा हमें अवश्य ही क्रूस पर चढ़ाया जाना चाहिए।”

## अंतरिक्षविज्ञ

मैं ने तथा मेरे मित्र ने मन्दिर की छाया में एक दृष्टिहीन व्यक्ति को अकेले बैठे देखा। तथा मेरे मित्र ने कहा, “हमारी धरती के सबसे बुद्धिमान व्यक्ति को देखो।”

तब मैं अपने मित्र से विदा हुआ तथा दृष्टिहीन व्यक्ति के पास पहुँचा और उन्हें नमस्कार किया। और हम ने बातचीत की।

कुछ देर के बाद मैंने कहा, “यह प्रश्न पूछने के लिए क्षमा चाहता हूँ, परंतु आप कब से दृष्टि से असहाय हैं?”

“अपने जन्म से ही।” उन्होंने उत्तर दिया।

मैंने पूछा, “और आप बुद्धिमता की किस पथ पर अग्रसर हैं?”

उन्होंने उत्तर दिया, “मैं एक अंतरिक्षविज्ञ हूँ।”

तब उन्होंने अपना हाथ अपने सीने पर रखा और संबोधन कियो, “मैं यह सब आदित्य, इन्दु तथा सितारे देखता हूँ।”

## बहुत पुरानी अभिलाषा

मैं यहाँ अपने भ्राता, पहाड़ एवं अपनी भगिनी, समुद्र के बीच बैठा हूँ ।

हम तीनों एकांत में एक हैं, तथा हमें बंधन में बांधने वाली मुहब्बत गहरी, मज़बूत तथा अजीब है ।

नहीं, यह मेरी बहन की गहराई से अधिक गहरी, मेरे भाई की ताकत से अधिक मज़बूत और मेरी दीवानगी की अजनबीयत से अधिक अजनबी है ।

जब से पहली धूसर प्रभात ने हमको एक दूसरे के लिए दृश्यमान बनाया तब से समूहों के समूह युगों का प्रस्थान हुआ है; और यद्यपि हम ने कई सारे संसारों के जन्म एवं परिपूर्णताएँ तथा मृत्युयें देखीं हैं, हम अभी भी अभिलाषी एवं जवान हैं ।

हम युवा तथा महत्वाकांक्षी हैं किन्तु फिर भी हम अविवाहित एवं उपेक्षाकृत हैं; और हालांकि हम अटूट अर्ध-आलिंगन में हैं, हमें राहत नसीब नहीं हुई है । और दबायी हुई इच्छा एवं पूर्णता तक न पहुँची उत्कंठाओं को क्या राहत मिल सकती है? मेरी भगिनी की शय्या को गर्म करने वाला दीप्यमान देवता कहाँ से आएगा? और मेरे भाई की अग्नि को कौन सी तीव्र प्रवाह शीतल करेगी? और कौन ऐसी महिला है जो मेरे हृदय पर शासन करे?

रात के सन्नाटे में मेरी बहन अपनी नींद में अग्नि देवता का अज्ञात नाम लेती है, और मेरा भाई शांत एवं

बहुत दूर की देवी को पुकारता है। परंतु मैं अपनी निद्रा में किसे पुकारता हूँ, मुझे ज्ञात नहीं।

....

मैं यहाँ अपने भ्राता, पहाड़ एवं अपनी भगिनी, समुद्र के बीच बैठा हूँ। हम तीनों एकांत में एक हैं, तथा हमें बंधन में बांधने वाली मुहब्बत गहरी, मज़बूत तथा अजीब है।

## घास का एक तृण बोला

घास के एक तृण ने शरद-ऋतु की पत्ती से कहा, “तुम गिरते हुए इतना शोर मचाती हो ! तुम शीतकाल के मेरे सारे सपनों को बिखेर देती हो ।”

भावावेश में आई पत्ती ने उत्तर दिया, “जन्मजात नीच एवं अधम निवासी ! गायन-अज्ञानी, चिड़चिड़े ! तुम ऊपरी पवन में नहीं रहते हो ना, तुम गायन की ध्वनि को क्या जानो ।”

तब शरद-ऋतु की पत्ती भूमि पर लेट गई और सो गई । और जब वसंत आया, वह फिर से जागृत हुई एवं वह घास का एक तृण हो गई थी ।

और जब पतझड़ आया एवं उस के नयन शीतकाल की नींद से भारी थे, तथा उसके ऊपर की ओर से हवाओं में हर जगह तैर तैर कर पत्तियाँ गिर रहीं थीं, उसने स्वयं से बड़बड़ाहट में कहा, “दिक्कार है इन शरद-ऋतु की पत्तियों पर ! यह इतना कोलाहल मचाती हैं ! यह शीतऋतु के मेरे सारे स्वप्न बिखेर देती हैं ।”

## आँख

एक दिन आँख ने कहा, “मैं इन घाटियों के परे एक पहाड़ देख रही हूँ जो नीली धुँध से ढका हुआ है। क्या यह सुंदर नहीं है?”

कर्ण ने सुना, तथा थोड़ी देर तक ध्यान से सुनने के बाद कहा, “परंतु कहाँ है कोई पहाड़? मैं उसे सुन नहीं रहा हूँ।”

तब हाथ बोल पड़ा और उसने कहा, “मैं यह महसूस करने या छूने का व्यर्थ प्रयास कर रहा हूँ, और मैं कोई पहाड़ महसूस नहीं कर पा रहा हूँ।”

फिर नाक ने फरमाया, “कोई पहाड़ नहीं है, मैं उसे सूँघ नहीं सकती हूँ।”

तब आँख दूसरी ओर मुड़ गई, और वे सभी आपस में आँख की अजीब गलतफहमी के बारे में बात करने लगे। तथा उन्होंने कहा, “कुछ न कुछ आँख को जरूर हो गया है।”

## दो विद्वान

एक समय का उल्लेख है कि अफ़कार के प्राचीन नगर में दो विद्वान रहते थे, जो एक दूसरे के ज्ञान से घृणा करते थे तथा उसे निम्न स्तर में मूल्यांकन करते थे। क्योंकि उनमें से एक ला-इल्ला (कोई ईश्वर नहीं) कहता था तो दूसरा इल्ला-दर-इल्ला (ईश्वर ही ईश्वर) कहता था।

एक दिन इन दोनों की बीच बाज़ार में भेंट हुई, और अपने अपने अनुयायियों के मध्य उन्होंने ईश्वरों के अस्तित्व तथा अस्तित्वहीनता के विषय पर वाद-विवाद तथा तर्क-वितर्क का श्री गणेश किया। अतःपरं घंटों के द्वन्द्व के पश्चात् वे अलग हो गए।

उस संध्या के समय विश्वास न करने वाला विद्वान मन्दिर गया तथा वहाँ वेदी के संमुख प्रणाम किया और देवताओं से अपने पापी अतीत को क्षमा करने की प्रार्थना की।

और उसी समय द्वितीय विद्वान, जो देवताओं का श्रद्धालु था, अपनी पवित्र पुस्तकों को अग्नि में भस्म कर रहा था। क्योंकि वह एक नास्तिक बन गया था।

## जब मेरा विषाद जन्मा

जब मेरा विषाद जन्मा, तो मैं ने सावधानी के साथ उसकी देखभाल की, तथा प्रेमयुक्त कोमलता से उसका ध्यान रखता रहा। और मेरा विषाद अन्य सभी प्राणियों की तरह बड़ा हुआ : मज़बूत एवं सुंदर तथा अद्भुत आह्लादों से लबालब।

और हम एक दूसरे को प्यार करते थे, मेरा विषाद एवं मैं, तथा हम अपने आसपास की दुनिया से मुहब्बत करते थे; क्योंकि विषाद का हृदय दयालु था तथा विषाद से भरा मेरा हृदय कृपालु था।

और जब हम बातचीत करते, मेरा विषाद एवं मैं, हमारे दिन उड़ानमग्न हो जाते तथा हमारी रातों में स्वप्न भर जाते, क्योंकि विषाद की भाषा वाग्मी थी, और विषाद से लैस मेरी भाषा सुवक्ता थी।

और जब हम साथ गाते थे, मेरा विषाद तथा मैं, हमारे पड़ोसी खिड़कियों पर बैठ कर सुनते थे; क्योंकि हमारे गीत समुद्र की तरह गहरे तथा हमारे तराने अद्भुत स्मृतियों से परिपूर्ण थे।

और जब हम साथ साथ चलते थे, मेरा विषाद एवं मैं, तो लोग हमें शालीनता भरी निगाहों से देखते और अत्यंत मधुर शब्दों में कानाफूसी करते थे। ऐसे लोग भी थे जो हम पर ईर्ष्या भरी नज़रें डालते, क्योंकि विषाद एक प्रतिष्ठित पात्र था तथा मैं विषाद से सुसज्जित होने के कारण गौरवरत था।

परंतु, सभी प्राणियों की भाँति, मेरा विषाद मृत्यु को प्राप्त हुआ, और सोचने तथा विचार विमर्श करने के लिए मैं अकेला हो गया ।

और अब जब मैं बात करता हूँ तो मेरे शब्द मेरे कानों पर भारी पड़ते हैं ।

तथा अब जब मैं गाता हूँ तो मेरे गीत को मेरे पड़ोसी सुनने के लिए नहीं आते हैं ।

और जब मैं गलियों में चलता हूँ तो कोई भी मुझे नहीं देखता है ।

मैं केवल अपनी नींद में आवाजें सुनता हूँ जो मुझ पर तरस खाकर कहती हैं, “देखो, यहाँ पड़ा है वह व्यक्ति जिसका विषाद मर चुका है ।”

## और जब मेरा आह्लाद जन्मा

और जब मेरा आह्लाद जन्मा, मैं ने उसको अपनी भुजाओं में पकड़ा तथा घर के ऊपरी आलिन्द पर खड़ा होकर आवाज लगाई, “आओ तुम सब, मेरे पड़ोसियो, आओ तथा देखो, क्योंकि आज मेरा आह्लाद पैदा हुआ है। आओ और देखो इस आनंदमय प्राणी को, जो धूप में हँसता है।”

परंतु मेरे पड़ोसियों में से कोई भी मेरे आह्लाद को देखने नहीं आया, तथा मेरी हैरानगी व्यापक थी।

तथा सात इन्दुओं तक हर दिन मैं घर के ऊपरी आलिन्द से अपने आह्लाद की घोषणा करता रहा। मगर फिर भी कोई मेरी ओर आकर्षित न हुआ।

और मैं तथा मेरा आह्लाद अकेले थे, अवांछित एवं उपेक्षाकृत।

तब मेरा आह्लाद पीला हुआ तथा ऊब गया क्योंकि मेरे सिवा किसी अन्य दिल ने उसका अभिराम न समाया और किन्ही अन्य होंठों ने उसके होंठ नहीं चूमे।

तब मेरा आह्लाद पृथक्ता के कारण इहलोक त्याग गया।

और अब मैं अपने स्वर्गीय विषाद का स्मरण करने में ही अपने परलोक सिधारे आह्लाद को याद करता हूँ। परंतु स्मृति शरद-ऋतु की एक पत्ती है जो वायु में थोड़ी देर सरसराती है और फिर शांत हो जाती है।

## “निपुण संसार”

खोई हुई आत्माओं के परमेश्वर, तुम जो कि ईश्वरों के बीच खोए हुए हो, मेरी विनती सुनो :

हम, दीवानी, घुमक्कड़ आत्माओं की निगरानी करने वाले करुणामय भाग्यदाता, मेरी विनती सुनो :

मैं एक निपुण प्रजाती के बीच रहता हूँ, मैं, जो सबसे त्रुटिपूर्ण हूँ ।

मैं, एक मानव दुर्व्यवस्था, अस्तव्यस्त तत्वों की एक नीहारिका, मैं पूर्ण किए हुए संसारों के बीच गुज़रता हूँ । पूर्ण किए हुए संसार, अर्थात् वे लोग जिनके नियम पूर्ण, जिनका अनुशासन बेदाग, जिनके विचार क्रमबद्ध, जिनके स्वप्न संगठित, तथा जिनकी दृष्टि तालिकांकित तथा पंचीकृत की हुई हैं ।

उनके गुण, हे परमेश्वर, नपे तुले हैं, उनके पाप तोले हुए हैं, तथा पाप एवं पुण्य से अलग की मन्द रोशनी में गुज़रने वाली अनगिनत चीजें भी उनके हाँ प्रविष्टि की जाती हैं तथा सूची में लिखी जाती हैं ।

यहाँ दिन एवं रातें नैतिकता के मौसमों में विभाजित हैं तथा निर्दोष सटीकता के नियमों से प्रशासित हैं ।

खाना, पीना, सोना, अपनी नग्नता ढकना, और फिर उचित समय आने पर ऊब जाना ।

काम करना, खेलना, गाना, नृत्य करना, तथा फिर उचित समय आने पर शिथिल हो जाना ।

इस तरह से सोचना, इस हद तक महसूस करना,

तथा फिर जब सामने के क्षितिज के ऊपर कोई विशेष तारे का उदय हो, तो सोचना तथा महसूस करना बंद कर देना ।

पड़ोसी को एक मुस्कान से लूटना, हाथ के एक प्रभुत्ववान हरकत के साथ उपहार प्रदान करना, सावधानी से प्रशंसा करना, सतर्कता से आरोप लगाना, एक शब्द से एक आत्मा को नष्ट करना, एक साँस से एक शरीर जलाना, तथा तब दिन का काम किए जाने के बाद हाथों को धोना ।

एक प्रचलित प्रणाली के अनुसार मुहब्बत करना, एक पूर्व-विचरित विधि से अपने उच्चतम अस्तित्व को आनंद प्रदान करना, ईश्वरों की उचित वंदना करना, भूतों को कौशल से उत्तेजित करना; तथा फिर सब कुछ भुला देना, जैसे कि स्मरण मृत हुआ हो ।

एक प्रयोजन के साथ कल्पना करना, परिणामदर्शी रूप में विचार करना, मधुर अंदाज़ में प्रसन्न होना, सज्जनता के साथ दुख झेलना । तथा फिर प्याले को खाली कर देना ताकि आगामी कल उसे पुनः भर सके ।

इन सब बातों का, हे परमेश्वर, दूरदृष्टि के साथ मनन किया जाता है, दृढ प्रतिबद्धता के साथ इनका जन्म होता है, सटीकता के साथ उनका पालनपोषण किया जाता है, कानून से प्रशासन किया जाता है, विवेक से निर्देश किया जाता है, और फिर एक निर्दिष्ट विधि अनुसार वध किया जाता है और दफन कर दिया जाता है । और यहाँ तक कि मानव आत्मा के भीतर विद्यमान

उनकी मौन कब्रों पर चिह्न लगा के उन्हें गिना जाता है।

यह एक निपुण संसार है, उच्चतम उत्कृष्टता का संसार, सर्वोच्च आश्चर्य की दुनिया, परमेश्वर के बगीचे में सबसे परिपक्व फल, ब्रह्मांड की सबसे ऊँची सोच।

परंतु मुझे यहाँ क्यों कर होना चाहिए, हे परमेश्वर, मैं जो कि अधूरी भावना का हरा बीज हूँ, एक पागल तूफान जिसे न पूरब न पश्चिम की तलाश है, एक जले हुए ग्रह का एक संभ्रांत अंश?

मैं यहाँ क्यों हूँ, हे खोई हुई आत्माओं के परमेश्वर, तुम जो ईश्वरों के बीच खोए हुए हो?



जून 1989 में कश्मीर से पलायन के पश्चात्, 1991 ई से काठमाण्डौ, नेपाल में आवासित ज़ेहन-निशीन 1979 ई से क्रांतिकारी संघर्ष, मानव-शास्त्र, समाज-शास्त्र, साहित्य, विज्ञान, इतिहास तथा दर्शन-शास्त्र में रूचि से व्यस्त रहे हैं । कई वर्ष एक अध्यापक की हैसियत से कार्य करने के पश्चात् 2006 ई से वह एवरयंग ग्लोबल इन्टेलेक्चुवल फाउन्डेशन,

काठमाण्डौ, नेपाल में टीम लीडर एवं संपादक की हैसियत से कार्यरत हैं । “Kashmir and Kilkenny Cats”, “Liberating the Future from the Past”, “Tenzin Tseten, the Trail and the Trait of the Time”, “The Most Perfect Man”, “I’m MiniKashmir”, “Fourteen Days that Mattered Not in the World”, “Contradictions in Special Relativity Theory”... के लेखक हैं ।

**ISBN: 978-99946-898-7-3**

**Typesetter; DTP and Publisher:**

**Everyyoung Global Intellectual Foundation**

**Contribution: NRs: 500/= or USD 5.00**